नए नियम में राज्य और वाचा

अध्याय 1

नए नियम के धर्मविज्ञान का अध्ययन क्यों किया जाए?

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
अभिप्रेरणा एवं अधिकार....2
अभिपुष्टियाँ....2
बारह प्रेरित....3
प्रेरित और भविष्यद्वक्ता....4
नए नियम की पुस्तकें....5
स्पष्टीकरण....6
अभिप्रेरणा....6
अधिकार....8
निरन्तरताएँ और अन्तराल....12
युग....13
निरन्तरताएँ....13
अन्तराल....14
सांस्कृतिक....16
निरन्तरताएँ....16
निरन्तरताएँ....17
व्यक्तिगत्....18
निरन्तरताएँ....19
अन्तराल....19
उपसंहार....21

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नए नियम में राज्य और वाचा

अध्याय एक

नए नियम के धर्मविज्ञान का अध्ययन क्यों किया जाए?

परिचय

यदि आपने कभी गंभीरता से कला, साहित्य के किसी एक हिस्से पर, नाटक या किसी एक फिल्म के किसी एक हिस्से पर कार्य करते हुए अध्ययन किया हो, तब आपको पता होगा कि इसका सावधानी से विश्लेषण करना और लापरवाही से इसका आनन्द लेने में एक बड़ा अन्तर हो सकता है। विस्तृत विश्लेषण हम इसे करना चाहते हैं और हम इसे कैसे करना चाहते हैं, के करने मे बहुत ज्यादा भिन्न, एक बहुत ही ज्यादा समय खर्च करने वाला कार्य हो सकता है। लेकिन दिन के अन्त में, आप और मैं जानते हैं कि कुछ बातें गहन ज्ञान को प्रतिस्थापित कर सकती हैं, जो कि एक विषय या प्रसंग के हिस्से के सूक्ष्म विश्लेषण से आती हैं।

कई अर्थों में, यह उस तरह का अनुभव है जिसे मसीह के अनुयायी अक्सर उस समय उपयोग करते हैं जब बात नए नियम की आती है। हमें इन पवित्रशास्त्रों को पढ़ने के आनन्द के बारे में पता है। परन्तु जिस अन्तर्दृष्टि को हम नए नियम और इसके धर्मविज्ञान का अध्ययन करने से पाते हैं, वे वास्तव में एक बड़ी पूर्णता का स्रोत हो सकती हैं।

यह नए नियम में राज्य और वाचा की हमारी श्रृंखला परहमारा पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में हम धर्मविज्ञान की एक अधिक पारम्परिक परिभाषा का पालन करेंगे जिसे नया नियम परमेश्वर स्वयं के बारे में और परमेश्वर से सम्बन्धित अन्य विषयों के सम्बन्ध के बारे में शिक्षा देता है। हमने इस पहले अध्याय का शीर्षक "नए नियम के धर्मविज्ञान का अध्ययन क्यों किया जाए?" के नाम से दिया। इस अध्याय में, हम यह देखना चाहते हैं कि क्यों नए नियम की साधारण जान पहचान से परे जाना महत्वपूर्ण है और सावधानी से स्वयं को नए नियम के धर्मविज्ञान के-गहन अध्ययन के लिए समर्पित करना चाहिए।

2 तीमुथियुस 2:15 में, प्रेरित पौलुस इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि नए नियम के धर्मविज्ञान की समझ के लिए अक्सर कठिन मेहनत करने की आवश्कता पड़ती है। सुनिए पौलुस ने तीमुथियुस को क्या कहा है:

> अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो (2 तीमुथियुस 2:15)।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, नए नियम के धर्मविज्ञान के कई आयाम काफी सरल हैं। परन्तु पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया है कि पवित्रशास्त्र को समझना सदैव आसान नहीं है। तीमुथियुस को "ऐसा काम करनेवाला होना था... जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।" यूनानी शब्द "ईरगेट्स" का अनुवाद एक "कार्यकर्ता" के लिए किया गया है जो अक्सर एक सांसारिक मजदूर की ओर संकेत करता है। पौलुस का रूपक इंगित करता है कि नए नियम के धर्मविज्ञान को अच्छी तरह से समझने के लिए अक्सर कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। परन्तु यदि नए नियम के धर्मविज्ञान को समझना इतना ज्यादा कठिन है तो फिर हमें क्या करना चाहिए?

> यह अत्यन्त दिलचस्प है कि पौलुस, तीमुथियुस को लिखे हुए अपने पत्र में, मात्र कुछ ही शब्दों में, दोनों बातें कह देता है अर्थात् पवित्रशास्त्र परमेश्वर के आत्मा की ओर से दिए गए थे – यह कि वे "परमेश्वर-श्वसित अर्थात् प्रेरित हैं" – परन्तु फिर कुछ वाक्यों के बाद में पौलुस तीमुथियुस को ऐसा कहता है कि, स्वयं को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> परमेश्वर का ग्रहणयोग्य होने के लिए अध्ययन करते हुए, कठिन परिश्रम करे जो कि पवित्रशास्त्र के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। पवित्रशास्त्र वास्तव में परमेश्वर के साथ न केवल एक वाचायी सम्बन्ध को, परमेश्वर की हमसे सम्प्रेषण के लिए अनुग्रह पहल को ही नहीं, अपितु साथ ही उसके वचन के प्रति हमारे दायित्व, हमारी प्रतिक्रिया को भी प्रतिबिम्बित करता है। और क्योंकि उसने हमें अपनेवचन को ऐसी भाषा में दिया है जिसे हम समझ सकते हैं – उसने मानवीय लेखकों के माध्यम से उनकी शैली और भाषा और ऐसे रूपों को जिनसे उस समय के लोग और स्थान परिचित थे, उपयोग करने में स्वयं को समायोजित करके बात की – हमें उस भाषा को सीखने के लिए कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है, यह सीखना चाहिए कि कैसे वह शैली कार्य करती है, कैसे ऐतिहासिक कथाएँ कविताओं से भिन्न कार्य करते हैं या व्यक्तिगत् पत्राचार से भिन्न कार्य करते हैं, ये विभिन्न रूप पवित्रशास्त्र में उपयोग किए गए हैं। और केवल बाइबल को उसके संदर्भ में पढ़ने के शब्दों में, यह समझना कि कैसे नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम का उपयोग भिन्न तरीके से किया जो कि उस समय के शब्दों में सामान्य थे कि कैसे किसी विशेष परिस्थिति में पहले के लिखे हुए मूलपाठ उपयोग किए गए थे। इस कारण, पौलुस तीमुथियुस को दोनों बातें कहता है कि पवित्रशास्त्र पवित्रआत्मा की ओर से परमेश्वर-प्रेरित है, परन्तु साथ ही तीमुथियुस – और हमें, तीमुथियुस के जैसे – कठिन परिश्रम करना और स्वयं को ग्रहणयोग्य होने के लिए इसका अध्ययन करना और पवित्रशास्त्र को उचित रीति से उपयोग करना चाहिए।
>
> — डॉ. ग्रैग पैरी

हम दो तरीकों के द्वारा यह पता लगाएंगे कि हमें कैसे नए नियम के धर्मविज्ञान का अध्ययन करना चाहिए। सर्वप्रथम, हम नए नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार की महत्वपूर्णता को समझने की जाँच करेंगे। और दूसरा, हम नए नियम के दिनों और हमारे दिनों में निरन्तरताओं और अन्तरालों के मध्य की चुनौतियों को निपटने परध्यान देंगे। आइए इन दोनों विषयों परनए नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार के साथ आरम्भ करते हुए अधिक निकटता से देखें।

अभिप्रेरणा एवं अधिकार

नए नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार की जाँच करने के लिए, हम बाइबल की इन अभिपुष्टियों परध्यान केन्द्रित करेंगे कि नया नियम दोनों अर्थात् अभिप्रेरित और अधिकारिक है। और तब, हम "अभिप्रेरणा" और "अधिकार" से हमारा क्या अर्थ है, के लिए कुछ स्पष्टीकरणों को देंगे। आइए मसीही विश्वास की महत्वपूर्ण मान्यताओं की इन बाइबल सम्मत अभिपुष्टियों के साथ आरम्भ करें

अभिपुष्टियाँ

जब मसीह के अनुयायी नए नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार के ऊपर मनन करते हैं, तो वे लगभग सदैव 2 तीमुथियुस 3:16 की ओर आग्रह करते हैं। जहाँ पर प्रेरित पौलुस ने ऐसे लिखा है:

> सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर-की-प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है (2 तीमुथियुस 3:16)।

यहाँ हम पाते हैं कि पौलुस ने पवित्रशास्त्र की अभिप्रेरणा को स्पर्श किया है जब उसने यह कहा कि "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर-की-प्रेरणा से रचा गया है," या जैसे यूनानी शब्द "थियोनियोस्टोस" को परमेश्वर द्वारा "श्वास छोड़ने" से अनुवादित किया जा सकता है। वह पवित्रशास्त्र के अधिकार के बारे में संकेत देता है जब वह कहता है कि पवित्रशास्त्र "उपदेश देने, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। यह समझने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रसंग है कि मसीह के अनुयायी नए नियम के बारे में क्या विश्वास करते हैं। परन्तु आइए अब 2 तीमुथियुस 3:15 को सुनें जहाँ पौलुस ने तीमुथियुस को ऐसा कहा कि:

> और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है (2 तीमुथियुस 3:15)।

ईमानदारी से कहा जाए तो, यहाँ जो "पवित्रशास्त्र" पौलुस के मन में है और जिसे तीमुथियुस ने "अपने बचपन" से जाना हुआ था, वह नया नियम नहीं, अपितु पुराना नियम था। इसलिए, मसीह के अनुयायी फिर क्यों पौलुस के पुराने नियम के बारे में कहे हुए शब्दों के लिए आग्रह करते हैं, जब वे नए नियम को अभिप्रेरित और अधिकारिक होने का संकेत करते हैं।

हम बाइबल सम्मत तीन अभिपुष्टियों को देखेंगे जो कि हमें नए नियम के अभिप्रेरित और अधिकारिक होने के प्रति हमारी समझ में सहायता करेंगी। सर्वप्रथम, हम यीशु के द्वारा उसके बारह चेलों की बुलाहट का पता लगाएंगे। दूसरा, हम प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की मूलभूत भूमिका के ऊपर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम नए नियम की पुस्तकें स्वयं में अभिप्रेरित और अधिकार प्राप्त हैं, की पुष्टि करेंगे। आइए सर्वप्रथम हम यह देखें कि यीशु केबारह चेलों कीबुलाहट कैसे नए नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार की पुष्टि करतीहैं।

बारह प्रेरित

जब यीशु ने इस्राएल में परमेश्वर के प्रयोजनों को पूरा करने के लिए परमेश्वर के लोगों को शेष बचे हुओं के रूप में स्थापित करना आरम्भ कर दिया, तो उसने बारह शिष्यों के विशेष समूह को अपने निमित्त बुलाया। सुसमाचार बिल्कुल स्पष्ट करते हैं कि यीशु ने अन्यों से अलग करते हुए बारह शिष्यों को अपने निमित्त चुन लिया जो उसका अनुसरण करने लगे। और इस भिन्नता ने, यहूदा इस्करियोती के अपवाद को छोड़कर, ऐसा बना दिया जिन्हें उसने बाद में संसार में उसके अधिकारिक प्रेरितों के रूप में भेजा।

यूहन्ना 16:13 में हम यीशु के अपनेबारह शिष्यों को कहे गए निम्न शब्दों को पढ़ते हैं:

> परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा (यूहन्ना 16:13)।

यह प्रसंग इंगित करता है कि वहाँ पर यीशु के शिष्यों को बहुत कुछ सीखना था। इसलिए "सत्य का आत्मा" आएगा और "जो बातें आनेवाली [थीं]" उसमें "[उन्हें] सत्य का मार्ग बताएगा।" हम यहाँ देखते हैं कि यीशु ने अपनेकुछ चुने हुए शिष्यों को अन्य बचे हुओं को पवित्र आत्मा के माध्यम के द्वारा अपनेअनुयायियों को शिक्षा देने के लिए ठहराया। ये और अन्य अंश नए नियम की अभिप्रेरणा में हमारी मान्यता की पुष्टि करते हैं।

अब, प्रेरित पौलुस, जिसने अधिकांश नए नियम को लिखा है, वास्तविक बारहों में से एक नहीं था। परन्तु बाइबल इस बात पर बिल्कुल स्पष्ट है कि पौलुस एक अधिकारिक प्रेरित था, और उसने उन सारी शर्तों को पूरा किया जो कि प्रेरितों के काम 1:21-22 में बारहों के लिए स्थापित की गई हैं। यह वह एक कारण है कि क्यों लूका ने दमिश्क की सड़क पर पौलुस की मसीह के साथ हुई दो बार मुठभेड़ों का विवरण दिया: सर्वप्रथम प्रेरितों के काम 9:1-19 में और 26:9-18 फिर 26:9-18 में। और गलातियों 1:11-2:10 यह सूचित करता है कि पौलुस ने तीन साल मसीह के साथ अरब के रेगिस्तान में व्यतीत किए थे। यह प्रसंग यह भी विवरण देता है कि यरूशलेम में रहने वाले प्रेरितों ने पौलुस के प्रेरितीय अधिकार की पुष्टि की थी। जैसा की पौलुस 1 कुरिन्थियों 15:8-9 में, यीशु के 500 से ज्यादा विश्वासियों के सामने प्रगट होने के बाद में लिखता है कि:

> [यीशु] सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूँ। क्योंकि मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूँ, वरन् प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैं ने परमेश्वर की कलीसिया को सताया था (1 कुरिन्थियों 15:8-9)।

एक प्रेरित होने के नाते पौलुस स्वयं को "अधूरे दिनों का जन्मा" हुआ और "प्रेरितों में सब से छोटा" कह कर पुकारता है। वही केवल एकमात्र ऐसा अधिकारिक प्रेरित है जिसके साथ यीशु अपनीपार्थिव सेवकाई के दौरान नहीं रहा। परन्तु पौलुस यीशु के मृतकोत्थान का गवाह था और यरूशलेम में रहने वाले प्रेरितों की ओर से स्वीकृत किया हुआ था।

यीशु के बारह शिष्यों की बुलाहट से सम्बन्धित अभिपुष्टियों को ध्यान में रखते हुए, हमें मसीह के पहली शताब्दी के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की अभिप्रेरणा और मूलभूत अधिकार का भी उल्लेख करना चाहिए।

प्रेरित और भविष्यद्वक्ता

पौलुस ने जिस तरह से इफिसियों 3:4-5 में लिखा है, उसे सुनें, जो इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि न केवल वे अपितु मसीह के सारे प्रेरित और भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के विशिष्ट प्रकाशन के प्राप्तकर्ता थे।

> मसीह का वह भेद... आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है (इफिसियों 3:4-5)।

यहाँ पर पौलुस उन विशिष्ठ मसीही शिक्षाओं की ओर संकेत करता है जिन्हें उस समय तक गुप्त, या एक "भेद" के रूप में रखा गया था जब तक कि वे "उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया हैं।" इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि, तब, इफिसियों 2:20-21 में पौलुस पहली शताब्दी के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को इस तरह से उल्लेख करता है:

> [कलीसिया] प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाया गया था। जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है (इफिसियों 2:20-21)।

जैसा कि यह प्रसंग हमें बताता है, परमेश्वर अपनीकलीसिया को "प्रभु में एक पवित्र मन्दिर" के रूप में निर्मित कर रहा है, और यीशु मसीह इसका "कोने का पत्थर" है। परन्तु इस बात पर ध्यान दें कि पौलुस स्वयं को कलीसिया की "नेव" के अंश के रूप में "प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं" के साथ पहचान कराता है। यह इंगित करता है कि परमेश्वर ने मसीह की कलीसिया की स्थापना प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की

अधिकारिक शिक्षाओं परकी है। और जैसा कि हम अपनी पहले की आयतों के ऊपर ध्यान देते हैं, प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षायें अधिकारिक थीं, क्योंकि वे पवित्रआत्मा की ओर से अभिप्रेरित थीं।

यीशु के बारह शिष्यों और मसीह के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के मूलभूत अधिकार की बाइबल की अभिपुष्टियों के अतिरिक्त, हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि प्रेरितों ने स्वयं नए नियम की पुस्तकों को पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के तुल्य स्वीकार किया। यह दृष्टिकोण नए नियम में कई स्थानों पर प्रगट होता है, परन्तु हम केवल दो ही उदाहरणों को देखेंगे।

नए नियम की पुस्तकें

1 तीमुथियुस 5:18 के साथ आरम्भ करते हुए, जहाँ पौलुस ने ऐसा लिखा है कि:

> क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, कि "दाँवनेवाले बैल का मुँह न बाँधना," क्योंकि "मजदूर अपनी मजदूरी का हक्कदार है" (1 तीमुथियुस 5:18)।

यह आयत हमें हो सकता है कि प्रथम दृष्टि में अनोखी दिखाई पड़े, परन्तु यह हमारे विचार विमर्श के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पौलुस, "क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है," के शब्दों के साथ आरम्भ करता है। वह फिर दो भिन्न अंशों से उद्धृत करता है। पहला उद्धरण, "दाँवनेवाले बैल का मुँह न बाँधना," पुराने नियम के व्यवस्थाविवरण 25:4 से लिया गया हवाला है। परन्तु दूसरा उद्धरण, "मजदूर अपनी मजदूरी का हक्कदार है," नए नियम के लूका 10:7 में से लिया गया हवाला है। पुराने नियम और नए नियम के अधिकार के मध्य का ये सहसम्बन्ध यह प्रगट करता है कि प्रेरित पौलुस ने मसीह के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के तुल्य माना।

हम कुछ ऐसा ही दृश्य 2 पतरस 3:15-16 में देखते हैं जहाँ पर प्रेरित पतरस ने ऐसा कहा है कि:

> पौलुस... ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है...उसकी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं (2 पतरस 3:15-16)।

इस प्रसंग में, पतरस ने यह स्वीकार किया है कि पौलुस ने "उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है।" दूसरे शब्दों में, पौलुस की पुस्तकों में स्वयं परमेश्वर का अधिकार समाहित है। परन्तु ध्यान दें कि कैसे पतरस ने मसीही विश्वास के विरोधियों की ओर संकेत किया है कि कैसे वे पौलुस के पत्रों के द्वारा अर्थ को अनर्थ बनाते हैं जैसा कि उन्होंने "पवित्रशास्त्र की अन्य बातों के साथ [किया]" है। पतरस की पत्रियों के विस्तृत संदर्भ में, "पवित्रशास्त्र की अन्य बातों" यहाँ पर पुराने नियम के पवित्रशास्त्र से है। इस तरह से, हम यहाँ पर देखते हैं कि पतरस ने भी नए नियम के लेखों को पुराने नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार के तुल्य माना।

बाइबल यह पुष्टि करती है कि कलीसिया के लिए नया नियम परमेश्वर की ओर से अभिप्रेरित और अधिकारिक वचन है। स्वयं यीशु ने यह प्रतिज्ञा की है कि आत्मा उसके प्रेरितों को शिक्षा देगा। और उसने अपने प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को उसकी कलीसिया के मूलभूत अधिकारी के रूप में स्थापित किया है। इसके अतिरिक्त, जैसे परमेश्वर के लोगों ने पुराने नियम के पवित्रशास्त्र को परमेश्वर का अभिप्रेरित और अधिकारिक वचन के रूप में प्राप्त किया था, कलीसिया को मसीह के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को अभिप्रेरित और अधिकारिक होने के रूप में प्राप्त करने के लिए बुलाहट दी गई है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह देखने के बाद में कि कैसे नए नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार में हमारा विश्वास बाइबल की असंख्य अभिपुष्टियों के द्वारा समर्थित है, हम अब इन शब्दों के द्वारा हमने क्या कहा के अर्थ पर कुछ स्पष्टीकरणों को प्रस्तुत करेंगे।

स्पष्टीकरण

मसीही विश्वासी अक्सर जब नए नियम की बात आती है तो "अभिप्रेरणा" और "अधिकार" के शब्दों के भम्र में पड़ जाते हैं। इसलिए इस बात की पुष्टि इतनी ज्यादा महत्वपूर्ण है कि ये अवधारणायें सच्ची हैं, हमें यह भी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हम इन्हें ठीक रीति से समझते हैं।

हम स्पष्टीकरणों के ऊपर नए नियम के दो लक्षणों को अलग अलग देखेंगे। सर्वप्रथम, हम यह स्पष्ट करेंगे कि नए नियम की अभिप्रेरणा से हमारा क्या अर्थ है, और तब हम नए नियम के अधिकार पर ध्यान देंगे। आइए सबसे पहले नए नियम की अभिप्रेरणा की जाँच करें।

अभिप्रेरणा

पूरे इतिहास के दौरान, मसीह के अनुयायी होने का दावा करने वाले लोगों में जो कुछ वे नए नियम की अभिप्रेरणा या परमेश्वर की ओर से "श्वसित अर्थात् प्रेरणा प्राप्त होने" के अर्थ के बारे में बोलते हैं, के प्रति उनकी समझ में भिन्नता है। ये दृष्टिकोण हमें निरन्तरता या दृश्य के साथ बने रहने के बारे में सोचने में भी सहायता करते हैं।

दृश्य के एक छोर पर तो, कुछ धर्मवैज्ञानिक अभिप्रेरणा के छायावादी दृष्टिकोण पर बने रहते हैं। वे यह विश्वास करते हैं कि पवित्रआत्मा ने बाइबल आधारित लेखकों को उसी तरह से प्रेरित किया जैसे सांसारिक कवि या संगीतकार लिखने के लिए प्रेरित होते हैं। परिणामस्वरूप, वे यह सोचते हैं कि नया नियम केवल मानवीय लेखकों के व्यक्तिगत् मनन और विचारधाराओं से मिलकर बना हुआ है। वे यह स्वीकार करते हैं कि ये लेखक बुद्धिमान हो सकते हैं और उनको बहुत सी सूचनाओं की जानकारी थी जो हमारे लिए सहायतापूर्ण हो सकती है। परन्तु वे इस बात को स्वीकार करने से इन्कार कर देते हैं कि नया नियम पूरी तरह से जो कुछ परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम इसमें विश्वास करें, इसका अनभुव करें और इसका अनुसरण करें, का विश्वसनीय अभिलेख है, को मानने से इन्कार कर देते हैं।

दृश्य के विरोधी छोर पर, अन्य धर्मवैज्ञानिक यह विश्वास करते हैं जिसे वे यान्त्रिक अभिप्रेरणा कह कर पुकारते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, बाइबल के लेखक जब वे पवित्रशास्त्र को लिख रहे थे, तो अपेक्षाकृत निष्क्रिय थे। पवित्रशास्त्र ने अनिवार्य रूप से बाइबल का टंकण करवाया, और मानवीय लेखक निष्क्रिय भाव से जो कुछ उसने कहा था, को टंकित करते गए। यह दृष्टिकोण नए नियम के सत्य और अधिकार को तो स्वीकार करता है, परन्तु इस बात का इन्कार करता है कि मानवीय लेखक लेखन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण हिस्सा थे।

अन्त में, अधिकांश इवैन्जलिकल्स अर्थात् सुसमाचार सम्मत मसीही विश्वासी उसमें विश्वास करते हैं जिसे जैविक या सचेत प्रेरणा कह कर बुलाया जाता है। यह विवरण संकेत करता है कि परमेश्वर के आत्मा का कार्य और पवित्रशास्त्र के मानवीय लेखकों के कार्य को अलग करना असम्भव है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, पवित्रआत्मा मानवीय लेखक में लेखन का, निरीक्षण करने के लिए चलित हुआ और उनके शब्दों को निर्देशित किया। परिणामस्वरूप, पवित्रशास्त्र के शब्द परमेश्वर के शब्द हैं। इसके साथ साथ, पवित्रआत्मा ने मानवीय लेखकों के व्यक्तित्व, अनुभवों, दृष्टिकोणों और मंशाओं को भी उपयोग किया जब उसने उनके लेखों को निर्देशित किया। इसलिए, पवित्रशास्त्र के शब्द मानवीय लेखकों के शब्द भी हैं। तीसरा दृष्टिकोण पवित्रशास्त्र के प्रेरणा की प्रकृति के प्रति स्वयं की गवाही में उत्तम रीति से प्रतिबिम्बित होता है।

> अब, "सचेत प्रेरणा" के द्वारा वास्तव में हमारे कहने का यह अर्थ है कि पवित्रशास्त्र ऊपर स्वर्ग से नीचे हमारी गोद में गिराया नहीं गया है या फिर इसके लेखक कुछ सीमा तक स्वचलित थे...परन्तु लोगों ने पवित्रआत्मा के चलाए लिखा। और हमारे ऐसा कहने का अर्थ यह है कि, यद्यपि यह परमेश्वर का सन्देश है, परन्तु यह वास्तविक परिस्थितियों और वास्तविक स्थितियों में रहते हुए वास्तविक लोगों के द्वारा लिखा गया। अब, हो सकता है कि लोग इसके बारे में थोड़ी सी परेशानी का अनुभव करें। हो सकता है कि वे मनुष्य और लोगों के मध्य में ज्यादा सीधा सम्पर्क चाहते हों। परन्तु वास्तव में, यह जानना हमारे लिए अत्यधिक सहायतापूर्ण है, क्योंकि जब मैं पवित्रशास्त्र को पढ़ता हूँ, तो मैं परमेश्वर के सन्देश को जानता हूँ। और यह कि इसके द्विभागी स्वभाव हैं। यह परमेश्वर का सन्देश है परन्तु यह मानवीय प्राणी है जो मेरे अनुभव को समझता है, जो मेरे जैसे ही अनुभव में से मूलपाठ के प्रति उनके व्यक्तित्व में से होकर गुजर रहा है। और इसलिए, वास्तविकता में, जो हमारे पास है वह एक प्रेरित वचन है जो कि पूरी तरह से मानवीय अनुभव को समझता है। यह टंकित किया हुआ नहीं है। यह ऐसा कोई सन्देश नहीं है जिसका मानवीय संघर्ष से कोई लेना देना नहीं है। और इसलिए, जब हम "सचेत प्रेरणा" कहते हैं, तो इसका अर्थ यही कुछ होता है कि यह वास्तविक व्यक्तित्वों के साथ, वास्तविक परिस्थितियों में से होता हुआ आया है। और इसलिए जब उन्होंने लिखा, तो वे परमेश्वर के सन्देश को लिख रहे थे परन्तु जिस जीवन को वे यापन कर रहे थे उसके ज्ञान और अनुभव और जुनून के साथ लिख रहे थे।
>
> — डॉ. रिक्क रोडेहीवर

उदाहरण के लिए, एक बार फिर से सुनिए प्रेरित पतरस ने 2 पतरस 3:15-16 में क्या कहा है:

> पौलुस... ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है...उसकी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं (2 पतरस 3:15-16)।

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया था, पतरस ने स्वीकार किया है कि परमेश्वर के आत्मा ने पौलुस को पत्रों को लिखने के लिए प्रेरित किया। परन्तु यह ध्यान दें कि कैसे पतरस ने भी इंगित किया है कि यह अभिप्रेरणा सचेत प्रेरणा थी। जब पतरस ने यह लिखा कि "उसकी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है, जिन में कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है," उसने पौलुस की पृष्ठभूमि, व्यक्तित्व और लेखन शैली को भी स्वीकार किया है। उसका यह वाक्य पौलुस के उच्च शास्त्रीय शिक्षण को प्रतिबिम्बित करता है। और पौलुस की धर्मवैज्ञानिक विशेषज्ञता ने पतरस को चुनौती दी जो कि स्वयं अपेक्षाकृत गलील का एक अशिक्षित मछुआरा था।

पतरस का दृष्टिकोण हमें एक ऐसे उदाहरण को प्रदान करता है जिसका हमें उस समय अनुसरण करना चाहिए जब हम नए नियम के धर्मविज्ञान का उपयोग करते हैं। हमें सदैव यह ध्यान में रखना चाहिए कि बाइबल के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण परमेश्वर-श्वसित अर्थात् प्रेरित हैं। वे सच्चे और विश्वनीय हैं क्योंकि वे स्वयं परमेश्वर की ओर से आए हैं। तिस पर भी, हमारे लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हम मानवीय

लेखकों और उनकी मंशाओं के बारे में शिक्षण प्राप्त करने के लिए अपने सभी प्रयासों को सामने ले आए जब हम नए नियम के धर्मविज्ञान की खोज करते हैं।

सच्चाई तो यह है कि, सचेत प्रेरणा के सबसे विशिष्ठ आशयों में से एक सबसे महत्वपूर्ण यह है कि नए नियम के धर्मविज्ञान के हमारे अध्ययन के प्रति हमारा क्या अर्थ है। यदि हम विशुद्ध रूप से अभिप्रेरणा के छायावादी या यान्त्रिक दृष्टिकोण के ऊपर ही निर्भर रहेंगे, तो या तो हम मूलपाठ के अधिकार की उपेक्षा करेंगे या फिर लेखक के योगदान पर ध्यान नहीं देंगे। परन्तु सचेत प्रेरणा कम से कम नए नियम के धर्मविज्ञान का पता लगाने के लिए हम पर जोर डालती है।

सबसे मुख्य और स्पष्ट स्तर मूलपाठ स्वयं है। ये स्पष्ट कथन हमें नए नियम के धर्मविज्ञान के बारे में बहुत कुछ शिक्षा दे सकते हैं।

मूलपाठ ने नीचले स्तर पर, हमें नए नियम के लेखकों की कई अन्तर्निहित, या अलिखित, धर्मवैज्ञानिक पूर्वधारणाओं को पता लगाने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें लेखक की पृष्ठभूमि और धर्मवैज्ञानिक मान्यताओं का अध्ययन करना है। और हमें इस बात का पता लगाने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए कि जो कुछ उन्होंने लिखा उसे कैसे उनकी पृष्ठभूमि और मान्यताओं ने प्रभावित किया।

तीसरे स्तर पर, मूलपाठ के ऊपर, हमें लेखक के अन्तर्निहित प्रयोजनों के ऊपर भी चिंतन करने की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में, बाइबल के लेखकों की उनके श्रोताओं के लिए क्या मंशा की थी? कई बार, नए नियम के लेखक उनके श्रोताओं के ऊपर पड़ने वाले प्रभावों के प्रकारों के लिए व्यक्त की गई आशा के प्रति विशिष्ठ थे। परन्तु कम की अपेक्षा अधिकांश समय, उन्होंने अपने श्रोताओं से उनके मूलपाठों में निहितार्थों को पता लगा लेने की ही अपेक्षा की।

अब, जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं कि, जब हम नए नियम में से स्पष्ट कथनों, धर्मवैज्ञानिक पूर्वधारणाओं, और दृष्टिकोणों में दिए हुए निहित प्रयोजनों को ध्यान में रखते हुए पता लगाते हैं, तो यह सदैव आसान कार्य नहीं होता है। इसमें अक्सर बहुत ज्यादा अध्ययन की आवश्यकता होती है। परन्तु सचेत अभिप्रेरणा हमें नए नियम के धर्मविज्ञान के तीन स्तरों का पता लगाने के लिए इसे आवश्यक बना देती है।

हमने अभी अभी नए नियम की सचेत अभिप्रेरणा के लिए कुछ स्पष्टीकरणों को देखा। आइए अब हम इस बात को स्पष्ट करें कि नए नियम के पवित्रशास्त्र के अधिकार से हमारा क्या अर्थ है और कैसे हमें आज इस अधिकार के प्रति अपनी अनुक्रिया व्यक्त करनी चाहिए।

अधिकार

सभी इवैन्जलिकल्स अर्थात् सुसमाचार सम्मत मसीही विश्वासियों का उचित यह विश्वास है कि नए नियम का हमारे जीवनों के ऊपर अधिकार है। परन्तु हमें इस अधिकार की प्रकृति को समझने के लिए सावधान रहना चाहिए। दुर्भाग्य से, कई सही-अर्थ निकालने वाले मसीही विश्वासी भी इस बात को ध्यान में रखने में असफल हो जाते हैं कि नया नियम उनके लिए सीधा नहीं लिखा गया था। इसी बात को दूसरे शब्दों में ऐसे रखा जा सकता है कि, नया नियम हमारे लिए लिखा गया था, परन्तु हमारे लिए परोक्ष में नहीं लिखा गया था। हम सभी जानते हैं कि नया नियम हजारों वर्षों पहले लिखा गया था और उन दिनों में जीवन यापन करने वाले लोगों को दिया गया था। परन्तु इस तथ्य का उन तरीकों में बहुत ही थोड़ा प्रभाव है जिसमें हम नए नियम के अधिकार को स्वीकार करते हैं। इन सभों का नए नियम के अधिकार के बारे में बहुत ही महत्वपूर्ण कहना है: नए नियम का धर्मविज्ञान पूर्ण है, परन्तु आज के दिनों के मसीह के अनुयायियों के जीवनों पर अप्रत्यक्ष अधिकार है। और इस तथ्य का अर्थ यह है कि हमें सदैव मूल श्रोताओं को लिखे गए नए नियम के मूलपाठ के बारे जितना ज्यादा हो सके सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जब मसीह के अनुयायियों ने सर्वप्रथम जब नए नियम को पढ़ना आरम्भ किया तो वे अक्सर अपेक्षाकृत इसकी मूल शिक्षाओं की ओर खींचते चले जाते हैं। वे ऐसी बातों को पढ़ते हैं जैसे "यीशु प्रभु है," "पश्चाताप करो और सुसमाचार में विश्वास करो," "एक दूसरे को प्रेम करो" और कई अन्य महत्वपूर्ण शिक्षाओं के समूह को। उन्हें बहुत ज्यादा ऐतिहासिक परिस्थितियों, व्यक्तित्वों और नए नियम के लेखकों के प्रयोजनों पर ध्यान नहीं देना होता है। क्योंकि सभी व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए, वे इन मूल शिक्षाओं को व्यवहार में ऐसे ला सकते हैं कि मानो वह सामान्य रूप से कालातीत सत्य हो। और वे शायद ही कभी नए नियम के अधिकार के लिए प्रस्तुत निहितार्थों के अधीन होने से निपटारा करते हैं। परन्तु जब हम नए नियम के धर्मविज्ञान के बारे में सीखते हैं, तो यह ज्यादा से ज्यादा स्पष्ट होता चला जाता है कि हमें सावधानी से आज उचित रूप में उनके अधिकार को स्वीकार करने के लिए देखना होगा। हमें लेखकों की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों और आशयों के बारे में सीखना चाहिए। केवल तब ही हम अपने जीवन पर नए नियम के अधिकार के प्रति उचित रीति से अधीन हो सकते हैं।

> कई प्रश्नों में एक प्रश्न जो हमारे सामने आ खड़ा होता है वह यह है कि हम कैसे इस बात पर ध्यान देते हैं कि नया नियम, जो अन्य लोगों को लिखा गया था, हमारे ऊपर अधिकारिक है? अब सबसे पहले, यह इस अर्थ में हमारे ऊपर अधिकारिक है कि इसके पास हमारे ऊपर अधिकार रखने की सामर्थ्य या हक्क है। और प्रमाणिक लेखों के मूल प्राप्तकर्ताओं और हमारे स्वयं के मध्य में सम्पर्क हैं, ये सम्पर्क दो तरह के हैं। सर्व प्रथम, लेखक, इस मूलपाठ का दिव्य लेखक आज, कल और युगानुयुग एक सा है। यह वह है जिसके साथ हमें व्यवहार करना ही होगा। और दूसरा, यीशु मसीह के अनुयायी होने के नाते, हम परमेश्वर की वाचा के लोगों से सम्बन्धित हैं, और वे बातें जो सदियों पहले हमारी कलीसिया के कुछ सदस्यों को विशेष रूप से कही गई थीं, का आशय हमें भी इसमें सम्मिलित होने से है क्योंकि हम उनसे यीशु मसीह हमारे प्रभु के द्वारा परमेश्वर में सम्बन्धित हैं।
>
> — डॉ. ग्लीन स्रकोजी

कदाचित् हो सकता है कि एक रूपक जो कुछ हमारे मन में है, इसे स्पष्ट करने में हमारी सहायता करे। माता पिता, जिनके पास एक से ज्यादा बच्चे हैं, अच्छी तरह से जानते हैं कि वे कैसे पूरे, परन्तु अक्सर अप्रत्यक्ष, अधिकार को अपने बच्चों के ऊपर बनाए रखते हैं। कल्पना कीजिए कि एक माता पिता जो अपने पुत्र को उसके गलत व्यवहार पर गुस्सा करते हैं और उससे कहते हैं कि, "जाओ जाकर नीचे बैठ जाओ और सोचो की तुमने क्या किया है।" इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, उसकी बहिन उस समय खेलने में मस्त रहेगी। क्योंकि, अपने माता पिता उससे वार्तालाप नहीं कर रहे थे। परन्तु यदि उसकी बहिन कुछ क्षणों बाद उसके माता पिता की आज्ञा का पालन नहीं करती है, तो माता पिता उससे यह कह सकते हैं कि, "क्या तुम नहीं देखती हो कि तुम्हारे भाई के साथ अभी अभी क्या कुछ घटित हुआ है?" इस तरह की परिस्थितियों में, माता पिता अपेक्षा करते हैं कि उनके सभी बच्चे उन बातों से शिक्षा प्राप्त करें जिन्हें उन्होंने अपने एक बच्चे को सिखाया है। यह अप्रत्यक्ष अधिकार उनके सारे बच्चों को शिक्षा देता है कि कैसे उन्हें व्यवहार करना चाहिए, यद्यपि वे अनुशासन के प्रथम प्राप्तकर्ता नहीं रहे थे।

हमारे कहने का यही अर्थ होता है जब हम यह कहते हैं कि सचेत अभिप्रेरणा मसीह के आधुनिक अनुयायियों को नए नियम के पूरे परन्तु अप्रत्यक्ष अधिकार की ओर नेतृत्व प्रदान करता है। नए नियम के मूलपाठ ने प्रत्यक्ष में मूल श्रोताओं के साथ पूरे अधिकार से बातचीत की। और हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि वह आज भी पूरे अधिकार के साथ वार्तालाप करता है। क्योंकि मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों के लिए, यह प्रश्न ही नहीं उठता है कि हमें नए नियम की शिक्षा के अधीन होना है या नहीं।

प्रश्न केवल यह उठता है कि हमें कैसे इसके अधिकार के प्रति अधीन होना है। इसलिए, यह निर्धारण करने के लिए कि कैसे हमें इस अधिकार के प्रति अपनी अनुक्रिया को व्यक्त करना चाहिए, हमें उस मूल प्रयोजन एवं परिस्थिति को देखने के लिए तैयार रहना चाहिए जिसमें एक विशेष मूलपाठ लिखा गया था।

> परमेश्वर के वचन के बारे में जिस एक प्रश्न को अक्सर विद्यार्थी पूछते हैं, वह यह है कि कैसे वह सन्देश जिसे लगभग 2000 वर्षों पहले लोगों को दिया गया आज हमारे जीवनों के ऊपर लागू होता है? कैसे यह हमारे लिए या हमारे प्रति परमेश्वर का वचन हो सकता है? और मैं सोचता हूँ कि वहीं पर इसको समझने की कुँजी है, यद्यपि यह मूलपाठ हमारे लिए परमेश्वर का वचन नहीं है, तौभी वह अन्ततः हमारे लिए ही परमेश्वर का वचन है। और एक बात यह है कि बाइबल की प्रत्येक पुस्तक, प्रत्येक शैली, प्रत्येक परिस्थिति में सामान्य है वह यह है कि बाइबल की प्रत्येक पुस्तक हम पर परमेश्वर के स्वभाव को प्रकाशित करती है, कि परमेश्वर कौन है। यह प्रकाशित करती है कि हम उसके साथ सम्बन्धों में कौन हैं। और यह प्रकाशित करती है कि परमेश्वर का इस संसार में हमारे लिए क्या प्रयोजन है, हमें कैसे उसके प्रति अपनी अनुक्रिया को व्यक्त करना है और कैसे हमें अन्यों के प्रति अपनी अनुक्रिया को व्यक्त करना है। इसलिए, हम जो पवित्रशास्त्र से सीखते हैं वह परमेश्वर का हृदय है। हम परमेश्वर के स्वभाव और उद्देश्य को सीखते हैं। और हम सीख सकते हैं यद्यपि यह विभिन्न लोगों को विभिन्न संदर्भों में लिखा गया है, यद्यपि प्रत्यक्ष आदेश उन्हें दिया गया था जो कि हम पर प्रत्यक्ष लागू नहीं होता है, हम इस पर भी परमेश्वर के स्वभाव के बारे में, परमेश्वर के प्रयोजनों के बारे में, हम कौन हैं के बारे में और परमेश्वर के साथ हमें कैसे सम्बन्धों में रहना चाहिए, की शिक्षा को पाते हैं। इसलिए, अन्ततः, मैं यही कहूँगा कि बाइबल हमें परमेश्वर के हृदय और परमेश्वर के उद्देश्य की शिक्षा देती है, और इस तरह से यह हमारा मार्गदर्शन करती है कि हमें कैसे उसके साथ सम्बन्धों में और कैसे एक दूसरे के साथ सम्बन्धों में रहना है।
>
> — डॉ. मार्क एल. स्ट्रोस

उदाहरण के लिए, मत्ती 19:21 में, यीशु ने ये विशेष दिशा निर्देश एक जवान धनी न्यायी को दिया:

> यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले (मत्ती 19:21)।

कैसे हमें इस प्रसंग को अपने जीवनों में लागू करना चाहिए? क्या हम सभों को, प्रत्येक परिस्थिति में, "[हमारा] अपना माल बेचना और कंगालों को दे देना है?" केवल एक ही तरीका है जिसमें हम इस प्रश्न का उत्तर दायित्वपूर्ण दे सकते हैं, वह यह है कि वह जवान न्यायी कौन था और यीशु ने उसे इस तरह क्यों सम्बोधित किया।

इस व्यक्ति का पद और यीशु के साथ उसकी वार्तालाप यह सुझाव देती है कि वह यहूदी पृष्ठभूमि से आया था और समुदाय में उसका बहुत बहुत ज्यादा आर्थिक प्रभाव था। यह भी प्रतीत होता है कि उसने यहूदी रीति-रिवाजों को बड़ी गहनता से पूरा करने की कोशिश की थी। इस अध्याय में पहले उसने यीशु से यह पूछा था कि, "हे गुरू, मैं कौन सा भला काम करूँ कि अनन्त जीवन पाऊँ?" यीशु ने उत्तर दिया था कि, "आज्ञाओं को माना कर।" उस धनी जवान ने बड़े घमण्ड से घोषणा की थी कि वह इसे पूरी करता

आया है। इसलिए, यीशु ने उसे वह बात सम्बोधित की जो ऐसा जान पड़ता है कि मनुष्य का मुख्य कार्य है, विशेषकर धन सम्पत्ति और प्रभाव।

पवित्रशास्त्र निरन्तर हमें यह दिखाता है कि धन सम्पत्ति का होना स्वयं में और इसका होना बुरा नहीं है। न ही यह हमें मसीह की शिष्यता के अधीन आने से रोकता है। परन्तु फिर भी, यीशु के अनुयायी होने के नाते, हमारा हृदय सदैव परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा के लिए कुछ भी त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए।

इसी से सम्बन्धित एक अन्य उदाहरण प्रेरितों के काम 5:1-11 में मिलता है, जहाँ पर हनन्याह और सफीरा ने अपने सारे धन को कलीसिया को दे देने का बहाना बनाया, परन्तु गुप्त में उन्होंने स्वयं के लिए कुछ रख छोड़ा। यह पाप ऐसा नहीं था कि उन्होंने अपना सब कुछ नहीं दिया था – जिसको उनसे मांगा गया था – अपितु इसकी अपेक्षा उन्होंने लोकप्रिय स्वीकृति को पाने के लिए अपनी उदारता के बारे में झूठ बोला था।

यीशु की उस धनी जवान न्यायी के प्रति प्रतिक्रिया यह थी कि उसके अपने सारे माल को बेच देने का लेना देना प्रत्यक्ष रूप से धन के साथ नहीं था, अपितु इसकी अपेक्षा मनुष्य के मुख्य कार्य से है कि वह क्या बलिदान कर सकता है। यीशु ने उसके दिल को उस व्यक्ति की एक ऐसी बात कह कर स्पर्श कर लिया जिसे वह त्यागने के लिए तैयार नहीं था, जो उसका सारा माल था।

यह उदाहरण हमें समझने में सहायता करता है कि यदि हमें पवित्रशास्त्र के अधिकार के अधीन होना है, तो हमें किसी एक प्रसंग के मूल प्रयोजन और संदर्भ को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। केवल तभी हम यह आंकलन करने में सक्षम हो पाएंगे कि कैसे हमें उन बातों को पालन करना चाहिए जिनकी आज्ञा यीशु ने दी है।

> पुराने नियम की तरह, नया नियम, कालातीत कहावतों की एक श्रृंखला नहीं है जो प्रत्येक संस्कृति के लिए स्वचलित ही अर्थ को देती जाती हो। पुराने नियम की तरह, नया नियम, दर्शनशास्त्र नहीं है; यह दार्शनिक निरूपणों से मिलकर नहीं बना है, निरूपणों के ऐसे तरीकों से नहीं बना जो कदाचित् आसानी से प्रत्येक संस्कृति में स्थानान्तरित हो सके । नया नियम विशिष्ट है; यह ऐतिहासिक है। ऐसा होने के लिए कारण बिल्कुल स्पष्ट है। परमेश्वर ने स्वयं को पुराने नियम और नए नियम दोनों में प्रकट किया है, और जब परमेश्वर स्वयं को प्रकाशित करता है, तो वह विशेष लोगों के ऊपर स्वयं को प्रकाशित करता है। वह स्वयं को सामान्योक्तियों में प्रकट नहीं करता है, परिणामस्वरूप अन्त में, वह कदाचित् किसी के लिए भी अप्रासंगिक न हो क्योंकि वह इतना ज्यादा सामान्य है। इस तरह से, परमेश्वर ने स्वयं को अब्राहम, इसहाक, याकूब, मूसा, दाऊद, यशायाह को, यिर्मयाह को और तब, यीशु के द्वारा, उसके शिष्यों को, पतरस, पौलुस के ऊपर प्रकाशित किया। और इस तरह से, हमारे पास विशेष लोग विशेष परिस्थितियों में हैं। और ऐसा होना आवश्यक था। परमेश्वर सृजनहार है और सृष्टि समय और स्थान में अस्तित्व में बनी हुई है, और इसलिए जब परमेश्वर स्वयं को प्रकाशित करता है, उसे स्वयं को प्रकाशित करने के लिए समय और स्थान की आवश्यकता नहीं है।
>
> — डॉ. इक्कहार्ड जे. स्कैनाबैल

अभी तक "नए नियम के धर्मविज्ञान का अध्ययन क्यों किया जाए?" के ऊपर हमारे इस अध्याय में, हमने यह देखा कि नए नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार हमसे यह मांग करती है कि हम जितना ज्यादा हो सके नए नियम की पुस्तक के पुरातन ऐतिहासिक संदर्भ के बारे में शिक्षा प्राप्त कर लें। अब हम

नए नियम के दिनों और हमारे दिनों के मध्य में निरन्तरताओं और अन्तरालों को सम्बोधित करने के लिए तैयार हैं।

निरन्तरताएँ और अन्तराल

कल्पना कीजिए कि आपने 500 वर्षों पहले लिखी हुई एक पुस्तक को पढ़ने के लिए उठाया है। उस समय की भाषा आपके द्वारा बोली जानेवाली आज की भाषा से कुछ सीमा तक भिन्न होगी। अवधारणाओं को इस तरह से समझाया गया होगा जो हो सकता है थोड़ी अनोखी लगें। उस पुस्तक में उल्लिखित रीति-रिवाज और परम्पराएँ कुछ पुराने समय में प्रचलित होती हुई प्रकट होंगी। परन्तु उसी समय, यदि आप इस पर कार्य करें, तो आप पाएंगे कि कैसे यह पुस्तक आपके आज के दिनों के साथ सम्बन्धित होती है। यदि एक पुस्तक बहुत समय पहले लिखी गई हो तो वह जिस संसार में आप रहते हैं उससे पूरी तरह से भिन्न नहीं होगी। यह इतनी ज्यादा विदेशी नहीं होगी कि आप इससे कुछ भी अर्थ नहीं निकाल सकते हैं। इसका अर्थ प्राप्त करने के लिए कुछ प्रयासों की आवश्यकता होगी, परन्तु अन्ततः आप इससे बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं, जो ये पुरातन पुस्तक कहती है।

ऐसे ही कुछ का हम तब सामना करते हैं जब हम नए नियम के साथ निपटारा करते हैं। यह लगभग 2,000 वर्षों पहले लिखा गया था। और इसी कारण से, इसकी भाषा, अवधारणाएँ, रीति-रिवाज और परम्पराएँ उन बातों से भिन्न हैं जिनका हम अपने आज के आधुनिक संसार में करते हैं। परन्तु उसी समय, यदि हम इन विषयों के अध्ययन के लिए स्वयं को समर्पित करें तो हम देख सकते हैं कि नया नियम अभी भी कई तरह से हमारे संसार के साथ सम्बन्धित होता है।

> सच्चाई यह है कि बाइबल लगभग 2,000 वर्षों पहले लिखी होने के बाद भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है क्योंकि यह किसी एक विशेष समय में एक संस्कृति में लिखी गई थी। परन्तु सच्चाई यह है कि यह परमेश्वर का वचन है जो हमारे आज के समय के लिए भी प्रासंगिक है, क्योंकि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह और दया में हमसे वार्तालाप करना चुना। और इब्रानियों का पत्र हमें कहता है कि परमेश्वर का वचन दोधारी तलवार से भी ज्यादा चोखा है। और वास्तव में, यह वचन कुछ सीमा तक एक शल्य चिकित्सा वाले छोटे चाकू के समान है। और इस तरह से, परमेश्वर का वचन काटते हुए हमें खोल देता है और यह हमारे ऊपर एक अधिकार के रूप में खड़ा होते हुए हमें टंकण के लिए दिशा निर्देश देता और हमसे इसे करने की मांग करता है, और हमें आदेश देते हुए मांग करता है कि हमें क्या आज्ञापालन करना है, और यहाँ तक कि हमें यह बतलाता है कि हमें इसे न केवल प्रेम करना चाहिए, न केवल आज्ञा पालन करनी चाहिए, अपितु इसे वास्तविक प्रेम करना चाहिए और इसे स्मरण रखना चाहिए। और इसलिए अब यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है।
>
> — डॉ. जॉसोन औक्स

नए नियम और हमारे स्वयं के मध्य निरन्तरताओं और अन्तरालों के प्रति ज्यादा सावधानी से किया हुआ अध्ययन हमारी सहायता कर सकता है, हम तीन मुख्य विचारों पर ध्यान देंगे: युग के ऊपर विचार, संस्कृति के ऊपर विचार और व्यक्तिगत् बातों के ऊपर विचार। ये तीनों विषय आपस में परस्पर-

सम्बन्धित है, परन्तु फिर भी प्रत्येक के ऊपर व्यक्तिगत् रूप से विचार करना ज्यादा सहायतापूर्ण होगा। आइए सर्वप्रथम हम कुछ महत्वपूर्ण युगों पर विचारों को देखें।

युग

जब हम बाइबल आधारित इतिहास के किसी एक युग के बारे में बात करते हैं तो हमारे ध्यान में एक समय की ऐसी अवधि होती है जिसे दिव्य प्रकाशन के द्वारा स्थापित किया गया है जिसे समय की अन्य अवधियों से अलग किया जा सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, इतिहास को विभाजित करने के लिए भिन्न तरीके हैं, और समय की कोई भी अवधि पूरी तरह से उसके आगे आने वाले और पीछे जाने वाले समय से पृथक नहीं है। तौभी, हम अक्सर बाइबल के इतिहास को नए नियम के काल और पुराने नियम के काल में विभाजित कर देते हैं। हम नए नियम की अवधि को नई वाचा के समय के साथ परिचित करते हैं। यह युग मसीह के आगमन के साथ आरम्भ होता है और उसके पुन: आगमन तक निरन्तर चलता रहेगा। नई वाचा का यह काल बहुत ही ज्यादा विशिष्ठ है क्योंकि यह प्रतिज्ञात् मसीह का काल है। यह वह समय है जब यीशु, दाऊद का महान् पुत्र, परमेश्वर की ओर से राज्य करता है।

नए नियम के धर्मविज्ञान के अध्ययन के लिए युगों पर विचार क्यों किया जाए को समझने के लिए, हम युगों की निरन्तरताओं को देखेंगे जो नई वाचा के काल को एकजुट कर देती है। और तब, हम युगों के अन्तरालों के साथ निपटारा करेंगे जो कि अस्तित्व में हैं। आइए सर्वप्रथम निरन्तरताओं के साथ आरम्भ करें।

निरन्तरताएँ

नए नियम के दिनों और हमारे दिनों के मध्य कई युगों की निरन्तरताएँ हैं। इन सम्पर्कों को देखने के लिए एक सबसे उत्तम तरीका इस बात से सजग होना है कि आज के मसीही विश्वासी उसी परमेश्वर की सेवा करते हैं जिसकी सेवा मसीह के अनुयायियों ने पहली सदी में की थी। पारम्परिक व्यवस्थित धर्मविज्ञान के धर्मशास्त्री अक्सर इस ओर संकेत करते हैं कि पविशास्त्र यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर कैसे अपरिवर्तनीय, या न बदलने वाला है। उसकी अटल विशेषताओं, उसकी अनन्त की योजना और उसकी वाचाई शपथों जो गिनती 23:19, यशायाह 46:10, और याकूब 1:17 जैसे प्रसंगों में दी गई हैं, पर ध्यान केंद्रित है। हम उसी परमेश्वर की सेवा करते हैं, हमें यह अपेक्षा करनी चाहिए कि वहाँ उन बातों में कई समानतायें होंगी जिन्हें परमेश्वर नए नियम के उसके लोगों से अपेक्षा करता था और जिन्हें वह आज हमारे दिनों में हमसे करता है। इब्रानियों 13:7-8 को सुनिए:

> जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उन के चाल- चलन का अन्त देखकर उन के विश्वास का अनुकरण करो। यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है (इब्रानियों 13:7-8)।

यहाँ इब्रानियों के लेखक ने बल दिया कि उसके श्रोता "ध्यान से अपने अगुवों के चाल-चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करें।" उसने उन्हें परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता का स्मरण दिलाने के द्वारा इस प्रोत्साहन का समर्थन किया जब उसने यह कहा, "यीशु मसीह आज, कल और युगानुयुग एक सा है।" उसके श्रोता आश्वस्त हो सके कि यदि वे अतीत के अपने अगुवों के विश्वास का अनुकरण करें तो वे अपने दिनों में भी उसी प्रकार के अन्त या परिणाम को देखेंगे क्योंकि यीशु अपरिवर्तनीय है।

नए नियम के मूल श्रोताओं की तरह ही, हम मसीह की मृत्यु के द्वारा पाप के लिए अन्तिम प्रायश्चित के हो जाने के बाद के दिनों में रहते हैं। हम मसीह के साथ उसके पुनरूत्थान में जी उठे हैं,

बिल्कुल पहली सदी के विश्वासियों की तरह ही हैं। हम ऐसे समय में रह रहे हैं जब परमेश्वर का आत्मा जितना पुराने नियम में प्रकट हुआ था उससे कहीं ज्यादा मात्रा में उण्डेला गया है। हम मसीह की उसी देह के अंश उसी मिशन के साथ हैं, जो पृथ्वी के अन्तिम छोर तक जो कुछ यीशु ने हमें सिखाया को फैला रहे हैं। इन सब बातों के बाद भी ऐसी ऐतिहासिक दूरी है जो हमें नए नियम के दिनों से अलग कर देती है, जिसे अपरिवर्तनीय सृष्टिकर्ता ने इस तरह की युगों की निरन्तरताओं में स्थापित किया है ताकि हम नए नियम को अपने दिनों में लागू कर सकें।

अब, क्योंकि हमने युगों पर कुछ विचारों और उन निरन्तरताओं पर जो हमारे दिनों और नए नियम के दिनों के मध्य में विद्यमान थी, को देख लिया है, इसलिए आइए नई वाचा के युग में कुछ अन्तरालों को देखें जो हमसे मांग करती हैं कि नए नियम के धर्मविज्ञान का सावधानी से अध्ययन करने के लिए हम स्वयं को समर्पित कर दें।

अन्तराल

यह सुनिश्चित हो कि, नए नियम के दिनों और हमारे दिनों के मध्य में युगों के अन्तराल वास्तव में उतने ज्यादा पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं जितने पुराने नियम के दिनों और हमारे दिनों के मध्य में हैं। तौभी, यहाँ पर कई महत्वपूर्ण मतभेद हैं जिन्हें हमें ध्यान में रखना चाहिए जब कभी हम नए नियम का अध्ययन करते हैं।

इफिसियों 2:20 में, प्रेरित पौलुस युगों के सबसे महत्वपूर्ण वास्तविक अन्तराल के बारे में संकेत करता है जब वह यह कहता है कि:

> [कलीसिया] प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं है, बनाई गई है (इफिसियों 2:20)।

यहाँ, पौलुस ने कलीसिया की नींव प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के मध्य और स्वयं यीशु मसीह में, और कलीसिया के पूरे इतिहास का अन्तर किया है।

जैसे कि पहले इस अध्याय में कहा गया है कि, लगभग 2,000 वर्षों पहले कलीसिया ने मसीह और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के स्वयं के ऊपर मूलभूत अधिकार होने को स्वीकार किया है। परन्तु हममें से बहुत से सजग होंगे कि वह अब और अधिक भौतिक रूप से विद्यमान नहीं है। यह वास्तविकता नए नियम के समयों और हमारे आज के दिनों में अन्तरालों की कई संख्याओं को उत्पन्न करती है।

सर्वप्रथम, नये नियम में ऐसे कई उदाहरण दिए हुए हैं जो कि यीशु, और उसके शिष्यों और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा प्रदर्शित किए हुए प्रमाणिक आश्चर्यकर्म हैं। इस तरह के आश्चर्यकर्मों को प्रकट करने की क्षमता ने यीशु और उसके प्रेरितों को कलीसिया के अधिकारिक और मूलभूत अगुवों के रूप में पृथक कर दिया। परमेश्वर आज भी कलीसिया में दिव्य तरीके से कार्य कर रहा है, परन्तु हम आश्चर्यकर्मों को नए कलीसियाई अगुवों के अधिकार को समझने के रूप में नहीं देखते हैं। इसकी अपेक्षा, कलीसिया में अधिकार आज नए नियम के मापदण्डों के आधार पर स्थापित होता है। और इसी कारण से, हमें इस बात का अध्ययन करने के लिए सुनिश्चित रहना चाहिए कि कैसे यह मापदण्ड हमारे दिनों पर लागू होते हैं।

दूसरा, नए नियम के समयों में यीशु के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं से प्रत्यक्ष आग्रह करना सम्भव था। मसीही विश्वासी प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं से प्रश्नों के उत्तर और दिशा निर्देश पाने के लिए आग्रह कर सकते थे। उदाहरण के लिए, हम इसे देखते हैं, कि किस तरह से पौलुस मसीह के अनुयायियों के आग्रहों को 1 और 2 कुरिन्थियों और फिलेमोन की पुस्तकों में प्रतिक्रिया देता है। इसके अतिरिक्त, नए नियम के दिनों में, कलीसिया-के-व्यापक विषयों को कलीसिया के मूलभूत अगुवों से वार्तालाप करके निर्धारित किया जा सकता था, जैसे कि प्रेरितों के काम 15 में यरूशलेम की परिषद् में दिखाई देता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परन्तु हमारे दिनों में, हमारे पास ऐसे मूलभूत अधिकारीगण हमारे मध्य में नहीं हैं। इसलिए, हमें नए नियम के हमारे अध्ययन से शिक्षा प्राप्त करनी है और इस पर विचार करना है कि इसे कैसे अपने दिनों में लागू करना है।

तीसरा, जब हम नए नियम के धर्मविज्ञान का अध्ययन करते हैं तो अक्सर हम इस सच्चाई का सामना करते हैं कि नए नियम के लेखकों ने धर्मविज्ञान के ऊपर जोर दिया जो कि कलीसिया की नींव पड़ने वाले समय के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण थे, परन्तु आज हमारे लिए उनका इतना मूल्य न हो।

नया नियम उस समयावधि के दौरान् लिखा गया था जब परमेश्वर के लोग पुराने और नए नियम के विश्वास के बीच परिवर्तित हो रहे थे। इसी कारण से, नए नियम में ऐसे बहुत से विषय हैं जो इस बात का निपटारा करते हैं कि मसीह के अनुयायियों को कैसे पुराने नियम की प्रथाओं और यहूदी परम्पराओं से सम्बन्धित होना चाहिए। क्या मसीही विश्वासी पुरूषों को खतना करवाने की आवश्यकता थी? क्या उन्हें यहूदी आहार सम्बन्धी व्यवस्था का पालन करना चाहिए था? कैसे मसीह के विश्वासियों को मसीह के अन्तिम प्रायश्चित दे दिए जाने के बाद मन्दिर में होते हुए बलिदानों की निरन्तरता को समझना चाहिए था? कैसे यहूदी रीति विधान और त्यौहारों को कलीसिया के जीवन में सम्मिलित किया जा सकता था? इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, इनमें से बहुत से मूलभूत धर्मवैज्ञानिक विषय बहुत पहले से ही निपटा दिए गए थे। और जब एक बार नई वाचा की नींव की समयावधि का अन्त हो गया, तब मसीही कलीसिया अन्य चुनौतियों का सामना करने की ओर बढ़ी।

जब हम नए नियम को पढ़ते हैं, तो युगों के अन्तरालों पर जय पाना कठिन हो सकता है। परन्तु, यदि हम पुरातन धर्मवैज्ञानिक विवादों के लिए दिए गए नए नियम के उत्तरों को आज के दिनों में लागू करना चाहते हैं, तो हमें अक्सर बहुत ज्यादा कठिन परिश्रम करना होगा और इन मूलपाठों का सावधानी से अध्ययन करना होगा।

> जब कोई बाइबल को पढ़ता है, तो उसे चाहिए कि वह इसे इसके मूल संदर्भ में रख दे। जब हम ऐसा करते हैं, तो कई बार, हम कुछ ऐसे विषयों के प्रति सजग नहीं रहते हैं जिनसे वे संघर्षरत् थे क्योंकि ऐसे विपरीत विषय हैं जिनसे हम आज के दिनों में मल्लयुद्ध कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, पुराने नियम में, सारे के सारे वाचाई विषय इस्राएल के साथ बंधे हुए हैं – जो कि पुरानी वाचा की अधीनता में रह रहे थे और तब जो कुछ आपके पास है अर्थात् मसीह का आगमन, उसकी पूर्णता है – यह धर्मवैज्ञानिक विषयों में से एक ऐसा मुख्य विषय है जिसके साथ कलीसिया को मल्लयुद्ध करना है। पुराने नियम की वाचा का सम्बन्ध क्या मांग करता है? यह कलीसिया में कैसे पूर्णता को लेकर आएगा? यहूदी और अन्यजातियों में क्या सम्बन्ध है? और यहाँ तक कि ऐसा कहने में भी, हम अक्सर उस तरह की श्रेणियों में नहीं सोचते हैं ताकि हमारे पास एक अच्छा कार्य हो कि हम सर्वप्रथम वापस पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ जाएं, इसे इसके ही शब्दों में सीखें, इसे इसके ही संदर्भ में सीखें, इसे इसके ही प्रस्तुतीकरण में सीखें, यह समझें कि कैसे वाचायें कार्य करती हैं, ये कैसे मसीह में पूर्णता को लेकर आती हैं, और तब ये सोचना आरम्भ करें कि ये कैसे अब हम पर लागू होती हैं?
>
> — डॉ. स्टीफन टी. वैलऊम

युगों के मध्य में निरन्तरताओं और अन्तरालों के ऊपर विचारों को देख लेने के बाद, हमें अब कुछ सांस्कृतिक विचारों का पता लगाना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सांस्कृतिक

जब हम संस्कृति की बात करते हैं, तो हमारे मन में मानवीय समुदायों की ऐसी पद्धतियाँ होती हैं जो कि साझा अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के परिणामों से विकसित हुई हैं। संस्कृति को कला, प्रचलन, प्रौद्योगिकी, राजनीतिक संरचनाओं, और अन्य दैनिक मानव संपर्कों जैसी बातों में अभिव्यक्त किया जाता हैं। और जब हम नए नियम के धर्मविज्ञान के साथ सम्बद्ध होते हैं, तो हमें जीवन के इन सांस्कृतिक आयामों को दोनों अर्थात् पहली सदी और हमारे आज के दिनों में ध्यान देना है।

जब कभी भी हम सांस्कृतिक विचारों के ऊपर अपने ध्यान को केन्द्रित करते हैं, तो हमें दोनों अर्थात् सांस्कृतिक निरन्तरता और इसके साथ ही अन्तरालों को देखना चाहिए। कई बार, यह एक आसान कार्य नहीं है। इसलिए, हमें सावधानी से स्वयं को चिंतन करने के लिए तैयार करके इसके प्रति समर्पित होना चाहिए। आइए सर्वप्रथम हम यह देखें कि यह कैसे सांस्कृतिक निरन्तरता के साथ सत्य है।

निरन्तरताएँ

हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक संस्कृति भिन्न है, और ये भिन्नतायें लौकिक और भौगौलिक दूरियों के कारण और ज्यादा विस्तृत होते हुए प्रगति करती हैं। परन्तु जितना ज्यादा हम इन भिन्नताओं को पहचानेंगे, हम पाएंगे कि प्रत्येक मानवीय संस्कृति उसी संसार में विद्यमान है। ये सच्चाई कई तरह की सांस्कृतिक निरन्तरता को यहाँ तक कि समय और भूगोल से परे होकर भी उत्पन्न करती है । इस संसार की प्रत्येक संस्कृति मानवीय प्राणियों के स्वभाव और भौतिक, प्राकृतिक पर्यावरण के द्वारा निर्मित होती है। और इसमें जब तक ये तथ्य एक जैसे हैं, तब तक संस्कृति की पद्धतियाँ एक जैसी ही रहती हैं। जैसा कि सभोपदेशक 1:9 कहता है कि:

> जो कुछ हुआ था, वही फिर होगा, और जो कुछ बन चुका है वही फिर बनाया जाएगा; और सूर्य के नीचे कोई बात नई नहीं है (सभोपदेशक 1:9)।

इस आलोक में, इस बात को हमें आश्चर्य में नहीं डालनी चाहिए कि जब हम सतही भिन्नताओं के नीचे देखते हैं, तो हम अपने समयों और नए नियम के समयों के मध्य कई सदृश गुणों को पाते हैं। हम अभी भी कपड़े पहनते हैं, कला का आनन्द लेते हैं, हमारे पास परिवार हैं, हमने सरकारों की स्थापना की है, और अपराधियों को सजा देते हैं, बहुत कुछ उसी तरह से जैसे नए नियम के समयों में हुआ था। इसी कारण से, पहली सदी और हमारे आज के दिनों के मध्य समानताओं को देखना अक्सर बहुत आसान होता है।

एक उदाहरण लीजिए, यूहन्ना 4:6-7 के दृश्य में, जो कि यीशु की सामरी स्त्री के साथ हुई वार्तालाप का परिचय देता है:

> यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई। इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई: यीशु ने उस से कहा, "मुझे पानी पिला?" (यूहन्ना 4:6-7)।

हम में से बहुतों ने इस दृश्य के सांस्कृतिक आयामों के ऊपर स्पष्टीकरणों को सुना होगा। यीशु ने एक सामरी स्त्री से मुलाकात की और उससे वार्तालाप की, यद्यपि यीशु के दिनों में सामरियों को "अशुद्ध" माना जाता था और उनके साथ किसी भी तरह से सम्बद्ध होने से इन्कार कर दिया जाता था।

अब, आधुनिक पाठक होने के नाते, हममें उस सामरी स्त्री के लिए इस तरह से या उस तरह से किसी भी तरह की कोई भावना नहीं है। और हम ऐसा भी नहीं सोचते हैं कि लोग अनुष्ठानिक रूप से शुद्ध हैं या नहीं। परन्तु तौभी, हमारे आज के दिनों में बाइबल आधारित इस दृश्य और सामाजिक पक्षपात में विशेष समानताओं को देखना कठिन नहीं है। दुर्भाग्य से, आज के लोग भी इस विषय पर पहली सदी के

लोगों से ज्यादा भिन्न नहीं हैं। और क्योंकि हम उसी संसार में रह रहे हैं जिसमें नए नियम के दिनों में लोग रहे थे, इसलिए हम अक्सर आधुनिक सांस्कृतिक अनुभवों को आसानी से, भिन्नताओं के होने के बाद भी रेखांकित करने के लिए स्वयं को सक्षम पाते हैं।

जबकि इस बात का अहसास करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि सांस्कृतिक बातों पर विचारों में नए नियम और हमारे स्वयं में सांस्कृतिक निरन्तरता सम्मिलित है, हमें इस बात के प्रति भी सजग होना चाहिए कि कैसे नए नियम के धर्मविज्ञान के प्रति हमारी समझ पर सांस्कृतिक अन्तराल प्रभाव डालते हैं।

निरन्तरताएँ

> पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी समझ यह है कि वह परमेश्वर का वचन है, और पवित्रशास्त्र का लेखक अन्तिम रूप से पवित्रआत्मा है। हम अक्सर कई बार पवित्रशास्त्र के बारे में उच्च प्रशंसनीय शब्दों में बोलते हैं, और इसलिए कई बार यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि, ठीक है, फिर हमें क्यों पवित्रआत्मा से परे कुछ और बातों को जानने की आवश्यकता है? हमें क्यों संस्कृति और पृष्ठभूमियों और भाषाओं का अध्ययन करने की आवश्यकता है? यदि हमारे पास स्वयं पवित्रशास्त्र है और वही परमेश्वर का वचन है, तो क्या वह पर्याप्त नहीं है? हमें समझना चाहिए कि पवित्रआत्मा ही अन्त में इसका अन्तिम लेखक है, परन्तु साथ ही पवित्रआत्मा ने मानवीय लेखकों के द्वारा कार्य किया और पवित्रशास्त्र को ऐतिहासिक संदर्भ में हमें दे दिया। हमारे आगे पवित्रशास्त्र इस तरह से नहीं रखा गया है कि वह मात्र साध्यात्मक सत्य की एक सूची है। हमारे पास ऐसा पवित्रशास्त्र नहीं है कि वह एक वैधानिक विधि पुस्तक हो जिसके अन्दर मात्र व्यवस्था के बाद व्यवस्था है, अर्थात् इसे नहीं करना है उसे करना है, की एक सूचीमात्र। हमारे पास ऐसा पवित्रशास्त्र नहीं है जिसमें केवल ज्ञान की कहावतें भरी हुई हैं – जिसमें एक कहावत, एक लोकोक्ति, एक नीतिवचन एक के बाद एक रखा गया हो – और हम किसी तरह से इनमें से सच्चाइयों का संकलन करते हैं। यद्यपि ये तत्व पवित्रशास्त्र में पाए जाते हैं, तौभी पवित्रशास्त्र परमेश्वर का एक प्रकाशन है, परमेश्वर का एक प्रकाशन है और परमेश्वर इतिहास में कार्य करता है। हम कई बार पवित्रशास्त्र के प्रति अपनी समझ को यह कहते हुए सारांशित करते हैं कि यह परमेश्वर का वचन है जो कि मानवीय लेखकों के शब्दों के द्वारा इतिहास में दिया गया है। और यह "इतिहास में" का वह अंश है जो हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि हम उस सांस्कृतिक संदर्भ को नहीं समझते हैं जिसमें पवित्रशास्त्र लिखा गया था, यदि हम उस भाषा को नहीं समझते हैं, तो पवित्रशास्त्र को आसानी से गलत समझा जा सकता है।
>
> — डॉ. ऐडवर्ड ऐम. केजीरियान

वास्तव में, हमारे आज के दिनों में और नये नियम के समयों में कई सांस्कृतिक दृष्टिकोण बहुत ज्यादा भिन्न हैं। और हमें इन अवरोधों के ऊपर विजय प्राप्त करने के लिए बहुत ज्यादा कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है जो कि नए नियम के धर्मविज्ञान की व्याख्या करने और उसे लागू करते समय विद्यमान हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस तरह के सांस्कृतिक अन्तराल के प्रकारों के उदाहरणों में से एक सबसे स्पष्ट भाषा का है जो कि नए नियम में उपयोग की गई है। आज मसीह के कुछ ही अनुयायी अपेक्षाकृत नए नियम को इसकी मूल भाषा यूनानी में पढ़ सकते हैं।

इससे आगे, हमें पहली सदी के साहित्यिक सम्मेलनों और नए नियम के लेखकों के द्वारा इब्रानी और यूनानी के संस्करणों के प्रभावों के ऊपर ध्यान देना चाहिए। हमें इसके साथ ही स्वयं की राजनैतिक, आर्थिक और उन दिनों की विस्तृत सामाजिक प्रथाओं की अज्ञानता से दूर होना चाहिए। केवल जब हम स्वयं को इन कार्यों के लिए समर्पित करते हैं तब ही हम नए नियम और हमारे दिनों के मध्य कई तरह के सांस्कृतिक अन्तरालों का निपटारा करने के लिए सक्षम हो सकेंगे।

> लन्दन में एक सुन्दर कहावत पाई जाती है। इसे कहते हैं, "खाली जगह का ध्यान रखें।" आप ने सुना होगा कि जब आप मेट्रो के भूमिगत रास्ते से प्लेटफार्म के ऊपर आने के लिए अपना कदम बढ़ाते हैं, तो वहाँ पर दोनों के बीच में एक रिक्त स्थान मिलता है, और वहाँ पर यह चेतावनी मिलती है जो निरन्तर दी जाती है: " खाली जगह का ध्यान रखें।" " खाली जगह का ध्यान रखें।" और यह इस बात पर सोचने के लिए एक महत्वपूर्ण विचार है कि क्यों नए नियम की सांस्कृतिक समझ बहुत ही महत्वपूर्ण है, जब हम नए नियम का प्रचार कर रहे, इसकी व्याख्या कर रहे और इसमें से शिक्षा दे रहे होते हैं, वह यह है कि हमें " खाली जगह का ध्यान रखने" की आवश्यकता है। यहाँ पर तब और अब में एक रिक्त स्थान है। उस भाषा में एक रिक्त स्थान है जिसे उपयोग किया गया है। ऐसा रिक्त स्थान है कि कैसे सामाजिक पहचान बनाई गई थी। यहाँ पर रिक्त स्थान है कि कैसे रिश्तेदारी को समझा गया था। 2,000 वर्षों पहले और आज के जीवन के मध्य लगभग प्रत्येक पहलू में एक रिक्त स्थान है। और यदि हम इस रिक्त स्थान के लिए सावधान न हों, तो हम अनिवार्य रूप से इस रिक्त स्थान को अपने स्वयं की संस्कृति, अपने स्वयं की बातों की समझ से भर देंगे। मूलपाठ को सुन कर यह देखने की अपेक्षा कि यह हमारे जीवनों में अब कैसे लागू होता है, हम वास्तव में इसके ठीक विपरीत करेंगे। हम जिस भी तरह से मूलपाठ को समझते हैं उसमें ही स्वयं के जीवन को निर्मित करेंगे। हम मूलपाठ में बोलेंगे, इसकी अपेक्षा कि यह हमसे बात करे। और इस तरह से हम कुछ बातों को खो देंगे...यदि हम यह विश्वास करें कि मूल भाषा को प्रेरित किया गया था, तब हम अपने मन को उस रिक्त स्थान को भरने के लिए तैयार कर लेंगे ताकि हम परमेश्वर के वचन को सुन सकें, यह नहीं कि कैसे हम स्वयं के सामाजिक विचारों को इनके ऊपर थोप दें।
>
> — डॉ. मार्क ऐ. जिन्नग्स

युगों के ऊपर विचारों और संस्कृति के ऊपर विचारों की इन निरन्तरताओं और अन्तरालों को अपने ध्यान में रखते हुए, आइए हम यह देखें कि व्यक्तिगत् बातों के ऊपर विचार कैसे हमसे मांग करते हैं कि हम नए नियम के धर्मविज्ञान का सावधानी से अध्ययन करें।

व्यक्तिगत्

हम सभी सामान्य अनुभव से जानते हैं कि लोग एक जैसे नहीं होते हैं। यहाँ तक वे लोग भी जो एक ही संस्कृति में रहते हैं भिन्न होते हैं। अक्सर, जब हम दूरस्थ स्थानों के लोगों से मिलते हैं या फिर अतीत के लोगों के बारे में पढ़ते हैं, तो हम सजग होते हैं कि मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक तथा आत्मिक

भिन्नतायें असँख्य मात्रा में हो सकती हैं। हम सभों के पास भिन्न तरह के अनुभव, गुण, डर, तोड़े, आत्मिक प्रवृतियाँ होती हैं; लोगों के मध्य में भिन्नताओं की एक बहुत ही लम्बी सूची होती है। इसलिए, जब हम नए नियम के धर्मविज्ञान का अध्ययन करते हैं तो हमें अपने दिनों में रहने वाले लोगों और नए नियम के दिनों में रहने वाले लोगों के मध्य की समानताओं और भिन्नताओं के ऊपर पूरा ध्यान देना चाहिए।

हम व्यक्तिगत् बातों के ऊपर विचारों को अपनी पहली की गई चर्चा की पंक्तियों पर ही करेंगे। सर्वप्रथम, नए नियम के लोगों और आधुनिक लोगों में किस तरह की व्यक्तिगत् निरन्तरता है? और दूसरा, उनके मध्य में किस तरह के अन्तराल हैं? आइए सर्व प्रथम हम निरन्तरताओं से आरम्भ करें।

निरन्तरताएँ

बाइबल आधारित दृष्टिकोण के अनुसार, बहुत सी समानतायें हमारे लोगों के लिए हैं जिनके प्रति हम विश्वस्त हो सकते हैं कि जिनसे हम शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और नए नियम के धर्मविज्ञान को जैसा हमें लागू करना चाहिए लागू कर सकते हैं। वस्तुत:, पवित्रशास्त्र हमें शिक्षा देता है कि नए नियम और हमारे आज के दिनों के सभी प्राणी एक जैसे ही लोग थे। नए नियम के लेखक, श्रोता और अन्य मानवीय पात्र परमेश्वर के स्वरूप में सृजे हुए थे, जैसे कि आज के हमारे दिनों में है। वे हमारे जैसे ही, विवेकी और तर्कसंगत थे। उनमें जैसा हमारे साथ आज के दिनों में होता है, उदासी और आनन्द का चरम होता था। और हमारी ही तरह, वे भी परमेश्वर के पतन में गिरे हुए स्वरूप थे जिन्हें मसीह के छुटकारे की आवश्यकता थी। वे भी पापों से संघर्ष करते थे, और इस पतित संसार में दर्द और कठिनाई को सहन करते थे। और वे जिन्होंने नए नियम के दिनों में मसीह में विश्वास किया, उन्होंने परमेश्वर की क्षमा के अनुग्रह और पवित्रआत्मा की आशीषों को उनके व्यक्तिगत् जीवनों में अनुभव किया था, बिल्कुल आज के दिनों की तरह जैसा हम करते हैं। इन और अन्य कई व्यक्तिगत् निरन्तरताओं के कारण, जिन्हें हम नए नियम में पढ़ते हैं हम अक्सर उस समय के लोगों के साथ आसानी से सम्पर्क स्थापित करने के लिए सक्षम हो जाते हैं।

उदाहरण के लिए, रोमियों 9:2-4 में, पौलुस ने उसकी गहन भावनाओं को अपने साथी यहूदियों को इस तरह से व्यक्त किया है:

> कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है। क्योंकि मैं यहाँ तक चाहता था, कि अपने भाइयों, के लिये जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, स्वयं ही मसीह से शापित हो जाता। वे इस्त्राएली हैं (रोमियों 9:2-4)।

ये आयतें पौलुस के बहुत ही व्यक्तिगत्, भावनात्मक अनुभव को प्रकट करती हैं। और मानवीय व्यक्तित्व पौलुस के दिनों से लेकर आज के हमारे दिनों तक इतना ज्यादा परिवर्तित नहीं हुआ है कि हमें उसकी भावनाओं के साथ कोई सहानुभूति ही नहीं हो सकती। उनके जैसी व्यक्तिगत् निरन्तरतायें हमारे लिए नए नियम के लेखकों, श्रोताओं और चरित्रों के प्रति हमारी समझ को अनुभव करने में अपेक्षाकृत आसान बना देती हैं। और हम इन अनुभवों को अपने आज के दिनों में लागू कर सकते हैं।

इसी समय, जबकि नए नियम में व्यक्तिगत् बातों के ऊपर विचार कुछ व्यक्तिगत् निरन्तरताओं में मिलते हैं, यहाँ पर कई व्यक्तिगत् अन्तराल भी पाए जाते हैं जो नए नियम के धर्मविज्ञान के प्रति हमारी समझ और इसे लागू करने के लिए कठिनाई को निर्मित करती हैं।

अन्तराल

नया नियम अक्सर विशेष तरह के लोगों को सम्बोधित करता है जो उनसे इतने ज्यादा भिन्न हैं जिन्हें हम जानते हैं कि जिनके साथ कई बार हम उचित सम्पर्क स्थापित करने में संघर्ष करते हैं।

व्यक्तिगत्, भावनात्मक प्रवृत्तियाँ, यहाँ तक उम्र और लिंग जैसे विषय अवरोधों को प्रकट कर सकते हैं जिन पर सावधानीपूर्वक किए गए अध्ययन के द्वारा जय प्राप्त करनी चाहिए।

> परमेश्वर हमारी भिन्न तरह की विशेष परिस्थितियों में, हम सभों की भिन्न तरह की पृष्ठभूमियों में अपने सारे लोगों की देखभाल करता है। हम कितनी तरह की भिन्न पृष्ठभूमियों और कितनी तरह की भिन्न संस्कृतियों के द्वारा इसे देख सकते हैं, जो कि वास्तव में, पूरी बाइबल में, बाइबल के विभिन्न अंशों में सम्बोधित की गई हैं। और इसी तरह से, एक बार जब हम यह समझ जाते हैं कि कैसे परमेश्वर उन लोगों से उनके संदर्भ में वार्तालाप कर रहा था, तो हम इन्हें उदाहरण समझते हुए इनसे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, और यह कि हमें इन्हें अपने आज के भिन्न संदर्भ में पुन: लागू करना है। परमेश्वर ने हमें विशेष संदर्भ में ठोस तरीकों से इन्हें दिया है, और वह हमसे यह अपेक्षा करता है कि इन्हें ठोस तरीकों से और विशेष परिस्थितियों में ही लागू किया जाए। परन्तु यह महत्वपूर्ण है कि हम उचित सिद्धान्तों को प्राप्त करें जो कि मूलपाठों में हैं ताकि हम इन्हें उचित तरीकों से पुन: लागू कर सकें।
>
> — डॉ. क्रेग ऐस. किन्नर

उदाहरण के लिए, इफिसियों 6:5, 9 में, पौलुस दो विशेष तरह के लोगों को दिशा निर्देश देता है। वह कहता है कि:

> हे दासो, जो लोग इस संसार में तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते, और काँपते हुए, जैसे मसीह की वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो... और हे स्वामियो, तुम भी धमकियाँ छोड़कर उन के साथ वैसा ही व्यवहार करो (इफिसियों 6:5, 9)।

जब हममें से बहुत से इन शब्दों को पढ़ते हैं, तो हम एक सतही जागरूकता को प्राप्त करते हैं जिसके बारे में पौलुस ने दासों और उनके स्वामियों को इफिसुस की कलीसिया में कहा। परन्तु मसीह में इन भाइयों और बहिनों के संघर्ष के प्रति हमारी जागरूकता गंभीर रूप से सीमित है क्योंकि हममें से एक बहुत बड़ा बहुमत कभी भी दास या स्वामी नहीं रहा है।

ये हमारे दिनों की अपेक्षा बहुत ज्यादा भिन्न तरह के लोग थे। और इसी कारण से, हमें अधिक कठिन परिश्रम को यह सीखने के लिए करना चाहिए इन लोगों ने पहली सदी में इफिसुस जैसे स्थानों में क्या अनुभव किया। केवल तब ही हम अपने आज के दिनों के साथ उचित समानता को रेखांकित करना आरम्भ कर सकते हैं और पौलुस के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को समझ सकते हैं जो उसने इस प्रसंग में दिए हैं।

> किसी भी समय जब हम नए नियम को लागू करने के लिए समझने की कोशिश करते हैं, तो कुँजी शब्द जो प्रत्येक समय निकल कर सामने आता है वह "संदर्भ" है। जितना अधिक हम पवित्रशास्त्र के उपयोग को पाना चाहे वह उतना ज्यादा कटा हुआ और सूखा और लगभग लकड़ी की तरह ही होगा, परन्तु ऐसी बात तो नए नियम के साथ भी नहीं है। मैं सदैव इस सच्चाई से मोहित हुआ हूँ कि पौलुस एक घटना में ऐसा कहता है कि, "हाँ, तीमुथियुस, तुझे सुसमाचार के कारण खतना करना चाहिए।" और अन्य घटना में वह अपने एक साथी से ऐसा कहता है कि, "नहीं, तुझे खतना, सुसमाचार के लिए नहीं करना चाहिए।" इस लिए यदि आप इस पर ध्यान दें तो, एक ही कार्य संस्कृति के संदर्भ की निर्भरता के ऊपर गलत या

> सही था। एक अन्य घटना में वह ऐसा कहता है कि, "तीमुथियुस, तुझे खतना करना चाहिए ताकि यहूदियों को सुसमाचार सुना सके।" ऐसा सुसमाचार के कारण से किया गया था। दूसरे संदर्भ में यह ऐसा था, मैं सोचता हूँ यह तीतुस की घटना में था, "तुझे खतना नहीं करना चाहिए क्योंकि जो लोग चाहते हैं कि तू खतना कर ले ऐसा सोचते हैं कि यही मुक्ति के लिए आवश्यक है, और यह सुसमाचार के विरोध में होगा।" इस कारण, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हमारी सांस्कृतिक स्थिति क्या है और कैसे बाइबल आधारित सिद्धान्त इसके ऊपर लागू होते हैं। और इसका अर्थ यह हुआ कि वास्तव में जितना ज्यादा हम पवित्रशास्त्र को समझते हैं उतना ज्यादा ही हमें संस्कृति को समझना चाहिए।
>
> — डॉ. डॉन लकीखा

नए नियम के दिनों में नए नियम के धर्मविज्ञान को स्वस्थ और बीमारों को, विकलांगों को, मजबूतों को, कमजोरों को, अमीरों को, गरीबों को, युवाओं को और बुजुर्गों को, पिताओं को, माताओं को, बहिनों और भाइयों को सभों को जो कुछ वे उनके दिनों में थे उसी तरीके से पालन करना था। किसी एक मात्रा तक या किसी अन्य मात्रा तक, ये और ऐसे ही समान व्यक्तिगत् तथ्य सदैव इस बात को प्रभावित करते हैं कि हम कैसे नए नियम के धर्मविज्ञान को हमारे आज के दिनों में भी लागू करते हैं। और व्यक्तिगत् बातों के ऊपर विचार हम सभों को जोर देते हैं कि हम नए नियम का अधिक मेहनत के साथ अध्ययन करें।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने यह पता लगाया कि मसीह के अनुयायी होने के नाते हमें क्यों नए नियम के धर्मविज्ञान का अध्ययन करना चाहिए। हमने नए नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार को देखा और देखा कि हमें नए नियम के अध्ययन के लिए स्वयं को समर्पित कर देना चाहिए क्योंकि नया नियम परमेश्वर की ओर से श्वसित अर्थात् प्रेरित है। हमने इस पर ध्यान दिया कि कैसे नए नियम के समयों और हमारे समयों के मध्य युगों की, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत् बातों की निरन्तरतायें और अन्तराल यह मांग करती हैं कि हमें स्वयं को नए नियम के धर्मविज्ञान की समझ और इसे लागू करने के लिए समर्पित करना चाहिए।

नया नियम इस तरह की एक पुस्तक है जो सरसरी झलक से बहुत ज्यादा ध्यान की हक्कदार है। कलीसिया के लिए परमेश्वर का वचन होने के नाते, हमें जितना ज्यादा हो सके इसे समझने के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हम आने वाले अध्यायों में इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई महत्वपूर्ण तरीकों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। और जब हम ऐसा करते हैं, तो हम कई ऐसे लाभों को देखेंगे जो कि बाइबल के इस हिस्से के ऊपर सावधानी से किए हुए चिन्तन के परिणामस्वरूप निकल कर आएंगे। और हम बार बार यह देखेंगे, कि हमें क्यों नए नियम के धर्मविज्ञान के लिए स्वयं को समर्पित कर देना चाहिए।